International Journal of Research and Analytical Reviews

An open Access, Peer Reviewed, Refereed, Indexed, online and printed International Research Journal

Approved by UGC
Journal No. 43602

E ISSN 2348-1269
Print ISSN 2349-5138
Impact Factor 5.75

Certificate of Publication

This is to certify that Prof. / Dr. भागीरथ सैनी & डॉ.भाबग्राही प्रधान had contributed a paper as author / co-author to

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS

Impact Factor 5.75

COSMOS Impact Factor 4.236

Title "बीपीएल परिवारों के विद्यार्थियों की शैक्षिक,आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं का एक अध्ययन"

and has got published in volume 6, Issue 1, **Jan. – March, 2019.**

The Editor in Chief & The Editorial Board appreciate the Intellectual Contribution of the author / co-author.

V.B.Jani
Executive Editor

R.B.Joshi
Editor in Chief

T. Pathak
Member Editorial Board

R. Pub. Cert. (1)

R. Pub. (17)

[VOLUME 6 I ISSUE 1 I JAN.- MARCH 2019] E ISSN 2348 -1269, PRINT ISSN 2349-5138

''बीपीएल परिवारों के विद्यार्थियों की शैक्षिक,आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं का एक अध्ययन''

भागीरथ सैनी* & डॉ.भाबग्राही प्रधान**

*पीएच.डी (शोधार्थी) शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ ,राजस्थान।

**सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ ,राजस्थान।

Received: September 22, 2018 Accepted: November 02, 2018

ABSTRACT:

Key Words:

➢ **उद्देश्यः-**

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य बीपीएल(Below Poverty Level)वर्ग के परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षिक, आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं का अध्ययन करना है। आज बीपीएल वर्ग के विद्यार्थियों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होना भी कठिन हो गया हैं। निर्धनता के कारण विद्यार्थी का शारीरिक विकास तो प्रभावित होता है ही साथ में उसे मानसिक संत्रास भी सहन करना पड़ता है। आर्थिक स्तर कमजोर होने के कारण उसकी शिक्षा प्रभावित होती है। ऐसे बालकों का मानसिक स्तर कमजोर हो जाता है, चिंतन,तर्क,कल्पनाशक्ति, समायोजन,सृजनशीलता एवं आत्म-सम्प्रत्यय प्रभावित होते है।इसलिये शोद्यार्थी ने इन समस्याओं का अध्ययन करने के लिए एक संक्षिप्त प्रयास किया है।

➢ **प्रस्तावनाः-**

निर्धनता के बारे में वेदों में कहा गया है कि है!'दरिद्रता तुम मेरे द्वार के पास से होकर भी मत जाना'। मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का आधार वित्त होता है। हमारे देश में वर्षों के आर्थिक विकास के पश्चात् भी प्रति व्यक्ति आय अभी बहुत कम है। भारत कीअधिकांश जनसंख्या निर्धनता रेखा (बीपीएल) के आस-पास स्थिर है, ऐसी स्थिति में निर्धन वर्ग के लिए शिक्षा के साथ-साथ रोटी, कपड़ा, एवं मकान को प्राप्त करना महत्त्वपूर्ण हो जाता हैं। गरीबी रेखा या निर्धनता रेखा (Poverty Line) आय के उस स्तर को कहते हैं, जिससे कम आमदनी होने पर व्यक्ति अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ रहता है। गरीबी रेखा या निर्धनता रेखा अलग-अलग देशों में अलग-अलग होती हैं। उदाहरण के लिए अमरीका में निर्धनता रेखा भारत में मान्य रेखा से काफी ऊपर है। हमारा देश भारत गणतंत्र, पंथ निरपेक्ष, विकासशील लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जो अन्तर्राष्ट्रीय जगत में स्वयं को विकसित राष्ट्र के रुप में स्थापित करने के लिये प्रयासरत है। लोकतांत्रिक व्यवस्था का अर्थएक ऐसी प्रणाली से लगा सकते है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान हो।

अतः यदि प्रजातंत्र को वास्तविक स्वरुप देना है तो हमें एक एक ऐसी व्यवस्था को जन्म देना होगा, जिसके द्वारा इस देश के प्रत्येक निर्धनता रेखा (बीपीएल) वर्ग के बालक को विकास के समान अवसर प्राप्त हो।स्वतंत्रता के पश्चात्निर्धनता रेखा (बीपीएल) वर्ग के छात्रों की शैक्षिक,आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं के लिए तथा उनका जीवन स्तर सुधारने के लिए सरकार अनेक योजनाएँ चला रही हैं। एक राष्ट्र की उन्नति उसके नागरिकों पर निर्भर है, जैसा कि सर्वविदित है कि आज का बालक देश का भावी नागरिक है। जिसे समाज ही पूर्ण रूप से तैयार करता है। इसलिए आवश्यक है कि हमारे भावी नागरिक योग्य, कुशल एवं आदर्श व्यक्तित्व लिए हो। बीपीएलवर्ग के बालकों के यह सभी व्यावहारिक पक्ष तभी विकसित हो सकते है, जब वह जीवन की विभिन्न शैक्षिक,आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं को विभिन्न प्रकार की सामाजिक परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित करने के लिए प्रस्तुत कर सके। बीपीएलपरिवारों के विद्यार्थियों कीशैक्षिक,आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं का अध्ययन निम्नलिखित बिन्दुओं के अर्न्तगत किया गया हैं :-

➢ **बीपीएल परिवारों के विद्यार्थियों की शैक्षिकसमस्याएँ:-**

प्राचीन भारत तथा आधुनिक भारत पर यदि सूक्ष्मता से दृष्टिपात किया जाए तो हम पायेगें की ''सर्व जन समभाव'' की भावना धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है।तथा बीपीएलवर्गके विद्यार्थी समाज के अन्य व्यक्तियोंसे विकास के मामले में पिछड़ते जा रहे हैं। बीपीएल वर्ग शिक्षा के अवसरों का लाभ उठाने में असमर्थ रहता हैं। इसके परिणाम स्वरुप सामाजिक जटिलता इतनी अधिक होती जा रही है कि चारों ओर असंतोष की आँधी आयी हुई है। समाज की इस कमजोर कड़ी को पथभ्रष्ट मानव समाज एवंशैक्षिकऔर सामाजिक पिछड़ेपन का सामना करना पड़ता है। परिणाम स्वरूप ये लोग राष्ट्रीय धारा में पूरी तरह से मिल नहीं पाये है, और समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने में असमर्थ रहे हैं।

इसलिए गाँधीजी ने कहा है कि ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा में अन्तर्निहित सर्वांगीण विकास को प्रकट कर सर्वोतम का विकास करना है।''

शिक्षा प्राप्त करने हेतु सामान्य विद्यालयों में जो विद्यार्थी आते है, उन्हीं के अनुरूप बीपीएलवर्ग के विद्यार्थियों को भी शिक्षा व्यवस्था में शामिल करना चाहिए। जिससे वे अपनी शिक्षा, सृजनशीलता व आत्म-सम्प्रत्यय का उचित विकास कर सके तथा जिसके कारण समाज, विद्यालय व राष्ट्र के जीवन में अभूतपूर्व वांछनीय परिवर्तन ला सके।भारत में बीपीएल वर्ग एवं अन्य विद्यार्थियों से सम्बन्धित शैक्षिक समस्याएँ निम्नलिखित हैं :-

1. विद्यालयों में पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की कमी एवं दोषपूर्ण पाठ्यक्रम।
2. विद्यालयों में पर्याप्त मात्रा में शिक्षण-सहायक सामग्री की कमी।
3. विद्यालयों के शिक्षकों का राजनीति में भाग लेना एवं संकुचित मानसिकता।
4. विद्यालयों में पर्याप्त मात्रा में पुस्तकों एवं पुस्तकालय की कमी।
5. विद्यालयों में बालकों द्वारा शिक्षण बीच में छोड़ देना (Drop Out)।